A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय संगीत के पारंपरिक लयबद्ध वाद्ययंत्रों के प्रचार-प्रसार में शबद कीर्तन परंपरा का योगदान

Shivansh[1], Dr. Tarnjit Singh[2], Dr. Kulwinder Singh[3]

1 Research Scholar, School of Liberal and Creative Arts, Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab, India
2 Assistant Professor, School of Liberal and Creative Arts, Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab, India
3 Associate Professor, School of Liberal and Creative Arts, Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab, India

OPEN ACCESS

सारांश

भक्ति संगीत की परंपरा में, इष्ट की आराधना के लिए जहां अपनी भावनाओं को पद रचनाओं के अधीन करके विभिन्न गायन शैलियों में रचा और गाया जाता है, वहीं इन गायन शैलियों के साथ संगत के लिये वाद्य यंत्रों का भी विधिवत उपयोग किया जाता है। इस संबंध में जब वाद्य यंत्रों का विकास हुआ तो न केवल उन्हें देवी-देवताओं के नाम दिए गए, बल्कि यह भी मान्यता दी गई कि उनका जन्म देवी-देवताओं द्वारा हुआ है, जैसे डमरू और रुद्र वीणा का जनक शिवाजी को माना जाता है। रुद्र वीणा के संबंध में यह प्रचलित है कि इसकी रचना शिवजी ने पार्वतीजी के स्वरूप से की थी। इसी प्रकार, ब्रह्मा, सरस्वती और नारद को क्रमशः मृदंग, सरस्वती वीणा और नारदी वीणा का जनक माना जाता है।[1] इसके बाद कुछ अवतार पुरुष और भक्ति आंदोलन के कवि हुए जिनका संबंध किसी एक विशेष वाद्ययंत्र से जुड़ा, जैसे कृष्ण भगवान का संबंध बांसुरी से और मीरा बाई, सूरदास, नामदेव जैसे भक्त कवियों का संबंध इकतारा वाद्य से जोड़ा जाता है.

***मुख्य शब्द** : शब्द कीर्तन, मृदंग, पखावज, जोड़ी, तबला, ढोलक, ताल।*

भूमिका

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के अंतर्गत सिख धर्म से संबंधित एक विशाल परंपरा स्थापित हुई, इस परंपरा में गुरुओं ने प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं जैसे शिव परंपरा, वैष्णव परंपरा, नाथ-जोगियों की परंपरा, सूफी परंपरा के साथ-साथ लोक संगीत परंपराओं के अभ्यासों को एक मंच पर एकत्रित किया जहां भक्तों द्वारा रचित साहित्य और गीत विधाएं देखी जा सकें। शबद कीर्तन की इस परंपरा में विभिन्न गायन शैलियों के साथ-साथ विभिन्न वाद्य यंत्रों का भी उपयोग किया गया है।

शबद कीर्तन को कीर्तन चौकी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें इस परंपरा में शास्त्रीय संगीत की ओर से प्रबंध, ध्रुपद-धमार, ख्याल गायन एवं लोक संगीत की ओर से अलाहुणीआं , घोड़ीयाँ, बारामाह, वारां, चौबोले, लावां आदि का गायन किया जाता है। संगीत की विभिन्न गायन शैलियों से परिपूर्ण कीर्तन चौकी की शुरुआत शान से होती है जिसमें ताल पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होता है। शान के बाद मंगलाचरण की प्रथा है जिसमें विलंबित लय में भगवान की स्तुति गाई जाती है। इसके बाद क्रमशः ध्रुपद-धमार और ख्याल अंग की बंदिशों का गायन होता है। जैसे-जैसे कीर्तन पूर्णता की ओर बढ़ता है, रीतों और धारणाओं पर आधारित शब्द गायन किए जाते हैं, जो आम लोगों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। अंत में शबद कीर्तन चौकी का समापन पउड़ी गायन के साथ होता है। शबद कीर्तन परंपरा में जीवन के विभिन्न चरण संबंधित चौकियों की व्यवस्था की गई है जैसे जन्म के समय की कीर्तन चौकी, विवाह के समय की कीर्तन चौकी, मृत्यु के समय की कीर्तन चौकी आदि। शबद कीर्तन परंपरा में प्रयुक्त लयबद्ध वाद्ययंत्रों की वाद्य परंपरा को इस शोध पत्र में प्रकाशित किया गया है।

मृदंग वाद्य

मृदंग शबद कीर्तन का प्रमुख वाद्य है। यह मध्यकालीन संगीत का एक लोकप्रिय वाद्ययंत्र था जिसका उपयोग कंठ संगीत, बीन, रबाब, सुर-सिंगार के साथ संगत के लिये किया जाता था। गुरु घर के रबाबी और रागी शबद-रीत के गायन के साथ मृदंग की संगति पसंद करते थे क्योंकि शबद-रीत रचनाएँ प्रचलित ध्रुपद-धमार और सादरा गायन शैली पर आधारित थीं। इसलिए, शबद-रीतों के साथ मृदंग की संगत के प्रभाव स्वरूप सिख भक्ति संगीत और अधिक प्रभावकारी हो जाता था।[3]

शबद कीर्तन के साथ मृदंग वाद्य का प्रयोग श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही प्रचलन में आ गया था, जिस को बाद के गुरुओं ने व्यवस्थित रूप में प्रयोग करके इसकी महत्वता को प्रकाशित किया। गुरु नानक देव जी के समय मृदंग वाद्य के प्रयोग का प्रमाण भाई गुरदास जी की वार के उपरोक्त

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संदर्भ से मिलता है। गुरु अर्जन देव जी के दरबार में शबद कीर्तन के साथ मृदंग की संगत होती थी जो उनके द्वारा रचित पदों/बानी में मृदंग/पखावज वाद्य के उल्लेख से स्पष्ट होता है।

"बाजे बजहि मृदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोले मधुर बैन अति सुहिआ ॥1॥" (रागु मलार महला 5, पड़ताल घर 3, अंग 1271)

"रबाबू पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै॥1॥ रहाऊ ॥" (आसा महला 5, अंग 381)

गुरु अर्जन देव जी के समय में भाई बाबक प्रसिद्ध मृदंग वादक हुए। वह भाई सत्ता और भाई बलवंडा डूम के साथ संगत करते थे, जो गुरु के दरबार के हुज़ूरी कीरतनकार थे। भाई बाबाक को श्री दरबार साहिब, अमृतसर के पहले पखावजी होने का गौरव प्राप्त हुआ।

सिखों के नौवें गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर जी ने न केवल अपने दरबार में कीर्तन करने के लिए मृदंग वाद्य का प्रयोग किया, बल्कि गुरु घर की इसी परंपरा को उजागर करते हुए अपने सिखों को भी इस वाद्य यंत्र से कीर्तन करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस बात का प्रमाण ऐतिहासिक घटनाओं से मिलता है जब गुरु साहिब सिख संगत का उद्धार करते हुए जौनपुर पहुंचे तो वहां भाई गुरबख्श के कीर्तन से प्रसन्न होकर उन्हें अपना मृदंग उपहार स्वरूप दिया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा संगति मृदंग वाली, सुशोभित है और गुरु साहिब द्वारा दिया गया मृदंग इस गुरु घर में संरक्षित है। गुरु साहिब के समय शबद कीर्तन में मृदंग की संगति का प्रमाण भाई संतोख सिंह जी द्वारा लिखित ग्रंथ में इस प्रकार मिलता है:-

"बजिह मृदंग रबाब बिसाला करहि कीर्तन शबद उजाला ॥" (गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि 12, अनु 12)

गुरु तेग बहादुर साहिब के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंह साहिब के दरबार में भी मृदंग वादन का उल्लेख ऐतिहासिक स्रोतों से मिलता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गुरु साहिब द्वारा रचित तवप्रसादि से प्राप्त होता है:

"बाजत ताल मुचंग पखावज नाचत कोटनि कोटि अखारे।" (दशम ग्रंथ, 533)

उपरोक्त सन्दर्भों से गुरु साहिब के समय में मृदंग, पखावज, नगाड़ा, ढोल आदि वाद्ययंत्रों के प्रयोग के बारे में पता चलता है, जिससे यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि गुरु साहिब के समय में इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग न केवल कीर्तन में किया गया है, बल्कि इसका उपयोग साहितिक रचनाओं में भक्ति और वीर रस के निर्माण के लिए भी किया जाता रहा है।

जोड़ी वाद्य

जोड़ी वाद्य शबद कीर्तन परंपरा में एक और ताल वाद्य है। मृदंग और पखावज वाद्य ध्रुपद-धमार गायन से अभिन्न रूप से जुड़े हुए थे, लेकिन गुरु घर की शबद कीर्तन परंपरा केवल ध्रुपद-धमार गायन पर आधारित नहीं थी, इसलिए शबद कीर्तन परंपरा की सैद्धांतिक व्यवस्था के प्रभाव में, गुरु घर में एक नया वाद्ययंत्र अस्तित्व में आया, जो शबद कीर्तन परंपरा की विभिन्न गायन शैलियाँ के साथ संगत के लिये अधिक सार्थक साबित हुआ। इस यंत्र का नाम जोड़ी था। जल्द ही यह वाद्य शबद कीर्तन परंपरा का अभिन्न अंग बन गया।

जोड़ी को संपूर्ण अवनध वाद्य कहा जाता है क्योंकि इस पर सथ, जत और गत का बखूबी वादन होता है। सथ का अर्थ है दोनों हाथों से धामे और पूड़े पर खुला वादन करना। इस वाद्य में बोल निकास ऊंचा और गंभीर होता है। जत का अर्थ है धामे पर खुला वादन करना। हाथों की मुद्रा खुली रहती है बोल निकास ऊंचा और गंभीर होता है। गत का वादन करते समय दोनों हाथ बंद रहते हैं और बोलों का निकास बीच में बंद और काम आवाज़ में होता है। कीर्तन में इसकी संगति को देखें तो ध्रुपद-धमार अंग के कीर्तन गायन के दौरान जोड़ी के ऊपर सथ अंग से वादन किया जाता है। जिसमें खुली हथेलियों और उंगलियों का प्रयोग किया जाता है। जोड़ी के इस प्रकार के वादन से ऊँचे एवं गम्भीर आवाज़ के साथ ध्रुपद गायन और भी भाव पूरन हो उठता है।

ख्याल गायन में जोड़ी पर गत अंग से वादन किया जाता है जिस में बंद हाथों से वादन किया जाता है, जो ख्याल अंग के गायन के अनुकूल है। लोक गायन परंपराओं में भी जोड़ी पर गत अंग से वादन किया जाता है, जोड़ी अपने आकार के कारण लोक संगीत की तालों को अधिक लचकता से बजाने में सक्षम हुई, जो मृदंग या पखावज पर संभव नहीं था। लोक गायन शैली के एक रूप वार में जोड़ी पर बजाय जाने वाला पौरी ताल का वादन वार के रूप को और अधिक भाव भरपूर कर देता है। नामधारी दरबार में वर्तमान समय की कीर्तन चौकी में जोड़ी वादन बजाने की प्रथा कायम है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तबला वाद्य

वर्तमान में शबद कीर्तन में मृदंग/पखावज एवं जोड़ी के स्थान पर मुख्य संगत वाद्य के रूप में प्राचीन जोड़ी के आधुनिक रूप तबले का प्रयोग किया जा रहा है। विदेशी विद्वान माइकल निझावन के अनुसार:-

"सिख कीर्तन हमेशा तंत्री और अवनद्ध वाद्य की संगत में किया जाता है। कीर्तन के लिए उपयोग किए जाने वाले वाद्यों के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों में ताऊस, सरिंदा और जोरी-पखावज शामिल हैं। आधुनिक समय में, हारमोनियम और तबला ने अपना स्थान ले लिया है।"[4]

यद्यपि तबला पर जोड़ी के विपरीत केवल गत अंग द्वारा बजाया जाता है किन्तु आधुनिक टेक्नॉलजी के प्रभाव में ध्वनिक उपकरणों में क्रांतिकारी परिवर्तन ने इस के वादन को शबद कीर्तन की संगत उपयोगी बना दिया है। तबले की वाद्य विशेषताएँ इसे वर्तमान में प्रचलित शबद गायन रुझानों के लिए एक उपयुक्त वाद्ययंत्र बनाती हैं। तबला वादन से उत्पन्न होने वाली ध्वनि बहुत नियंत्रित होती है। इस पर बजाए गए बोल विभिन्न लययुक्त, गमक भरपूर एवं लचकदार होते हैं जो वर्तमान में प्रचलित शबद कीर्तन गायन शैलियों के लिए उपयुक्त हैं।

ढोलक वाद्य

शबद कीर्तन की ताल वादन परंपरा में जोड़ी, तबला के साथ ढोलक का भी विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। ढोलक की परंपरा भी शबद कीर्तन के अन्य वाद्यों की तरह ही पुरानी है जिसका उल्लेख श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की रचना में मिलता है:

"ढढि ढोलक झांझ मृदंग मुखं॥

डफ ताल पखावज नाइ सुरं ॥" (दशम ग्रंथ, पृष्ठ 1184)

ढोलक का वादन लोक संगीत की शबद रीतों में संगत के रूप में किया जाता है। सिख धर्म में, इन शबद रीतों के गायन को जोटीयाँ और धारणा आधारित कीर्तन कहा जाता है। इन्हें गुरपुरब, प्रभात फेरियों, नगर कीर्तन के रूप में और ऐतिहासिक गुरुद्वारों में चौकी के रूप में गाने की प्रथा है। 15 से 17 इंच लंबी एक छोटी ढोलक का उपयोग आम जनता द्वारा गुरुद्वारों में कीर्तन चौकी और प्रभातफेरी के लिए किया जाता है। पहले दोनों तरफ की कुंडलियों को केवल डोरियों की मदद से ही कसा जाता था, लेकिन बाद में इन्हें कसने के लिए लोहे की छड़ों और नटों का इस्तेमाल किया जाने लगा। साधु संतों द्वारा धारणाओं आधारित कीर्तन में ढोलक का बड़ा रूप प्रयोग किया जाता है, जिसकी लंबाई 23 से 25 इंच होती है। इसका बड़ा आकार गहरी और ऊंची आवाज़ उत्पन्न करता है। सिख धर्म में कीर्तन की विभिन्न प्रस्तुतियों में ढोलक के प्रयोग को निम्नलिखित प्रकारों से देखा जा सकता है:

1). गुरुद्वारों में आम सिख संगत द्वारा प्रयोग।

2). प्रभात फेरियों और जोटीयों आधारित कीर्तन में संगत के लिए।

3). नगर कीर्तन में संगत के लिए।

4). स्त्री सत्संग कीर्तन में संगत के लिए।

5). धारणा आधारित कीर्तन में प्रयोग।

उपरोक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शबद कीर्तन की विशाल परंपरा में, जहाँ गायन के साथ तंत्री, सुषिर तथा घन वाद्यों का प्रयोग किया गया है, वहाँ गायन के साथ अवनध वाद्यों का प्रयोग करके इनकी विशेषता को भी सुशोभित किया गया। शबद कीर्तन की रचना के तहत जहां गुरु साहिब ने भारतीय गायन शैलियों के तहत गाने का विधान रचा, वहीं इनकी संगत के लिये भारतीय ताल वाद्यों को भी उनकी अलग-अलग शैलियों के साथ ही अपनाया गया। जिसके अंतर्गत शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्ययंत्र मृदंग/पखावज, जोड़ी, तबला तथा लोक संगीत में प्रयुक्त ढोलक को एक साझा मंच प्रदान किया है। इस प्रकार शबद कीर्तन परंपरा सदियों से पारंपरिक भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

संदर्भ

1. अमरजीत कौर (सं.), सामाजिक विज्ञान पत्र, संगीत वाद्ययंत्र: विशेष अंक, पटियाला: पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी, 2014. पृ.111

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

2. मिस्त्री, अबान ई. (डॉ.), पखावज और तबला के घरानो एवं परंपराएं, मुंबई: एस. जिजिना स्वर साधना समिति, 2000
3. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परंपरा, नई दिल्ली: राधा पब्लिकैशन, 1999. पृष्ठ 218
4. Nijhawan ,Michael, "From Divine Bliss To Ardent Passion: Exploring Sikh Religious Aesthetics Through The Dhadi Genre" History of Religions , The University of Chicago Press ,Vol. 42, No. 4 May, 2003.
5. दिआल सिंह, गुरमति संगीत सागर भाग 1-4, गुरु नानक विद्या भंडार ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2003
6. दिल, बलबीर सिंह, अमर कवि गुरु अमरदास, भाषा विभाग, पंजाब, 1975
7. धरम सिंह, हिरदेजीत भोगल, पंजाबी साहित्य दा इतिहास (1700 ई. तक), गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1999
8. नरूला, दर्शन सिंह, गुरबानी संगीत बारे, गुरमति स्टडी सर्कल, मलोट, 1985
9. नरैन सिंह, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर (1920-1925), गुरु नानक देव मिशन पटियाला, 1978
10. नाभा, कान्ह सिंह, गुर छंद दिवाकर, भाषा विभाग, पंजाब, 1991
11. पदम, वरिंदर कौर, गुरमति संगीत दा संगीत विज्ञान, अमरजीत साहित प्रकाशन, पटियाला, 2005